गूजरात विद्यापीठ : अहमदाबाद

महादेव देसाई ग्रामसेवा महाविद्यालय
रांधेजा / सादरा

हिंदी विभाग

सत्र-1 से 6 पाठ्यक्रम

समाजविद्या विशारद (बी.ए.)
(मुख्य विषय-हिंदी)

कुल छह सत्र

जून, 2014 से लागू

समाजविद्या विशारद – मुख्य विषय – हिंदी (बी.ए.)

स्नातक (हिंदी) पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम का ढाँचा

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) – मुख्य विषय हिंदी 3 वर्ष (6 सत्र)

प्रथम सत्र	**क्रेडिट**	**अध्ययन** (Contact Hours)	**अंक**
प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य-I MJR HIN–101	4	48	100
द्वितीय सत्र			
हिन्दी नाट्य साहित्य-I MJR HIN–201	4	48	100
हिंदी कथासाहित्य-I MJR HIN–202	4	48	100
	8	**96**	**200**
तृतीय सत्र			
छायावादोत्तर काव्य-I MJR HIN–301	4	48	100
हिंदी साहित्य का इतिहास-I MJR HIN–302	4	48	100
प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य-II MJR HIN–303	4	48	100
	12	**144**	**300**
चतुर्थ सत्र			
छायावादोत्तर काव्य-II MJR HIN–401	4	48	100
हिंदी कथासाहित्य-II MJR HIN–402	4	48	100
हिंदी साहित्य का इतिहास-II MJR HIN–403	4	48	100
हिन्दी नाट्य साहित्य-II MJR HIN–404	4	48	100
	16	**192**	**400**

पंचम सत्र

हिंदी साहित्य का आधुनिककाल-I MJR HIN–501	4	48	100
साहित्य के सिद्धांत और हिंदी आलोचना-I MJR HIN–502	4	48	100
विशेष साहित्यकार – धर्मवीरभारती-I MJR HIN–503	4	48	100
प्रादेशिक भाषा साहित्य-I MJR HIN–504	4	48	100
संचारमाध्यम लेखन-I MJR HIN–505	4	48	100
	20	**240**	**500**

षष्ठ सत्र

हिंदी साहित्य का आधुनिककाल-II MJR HIN–601	4	48	100
साहित्य के सिद्धांत और हिंदी आलोचना-II MJR HIN–602	4	48	100
विशेष साहित्यकार- धर्मवीरभारती-II MJR HIN–603	4	48	100
प्रादेशिक भाषासाहित्य-II MJR HIN–604	4	48	100
संचार माध्यम लेखन-II MJR HIN–605	4	48	100
	20	**240**	**500**

बीस अनिवार्य प्रश्नपत्र के क्रेडिट	80	2000
कुल क्रेडिट	80	2000

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-1)

प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य-I – MJR HIN - 101

प्राचीन से तात्पर्य है आदिकाल और मध्यकाल सही अर्थ में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास आदिकाल से शुरु होता है। इसमें धार्मिक तथा ऐहिक दो प्रकार का साहित्य मिलता है, जो प्रबंध मुक्तक, रासो, फागु चरित सुभाषित आदि विविध काव्यरूपों में अभिव्यंजित है। मध्यकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि के रूपमें इसे प्रतिस्थापित किया जाता है।

मध्यकालीन काव्य में भक्ति काव्य जहाँ लोकजागरण को स्वर देनेवाला है, वहीं रीतिकाल अपने लौकिक-शृंगारिक परिदृश्य में तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्थितियों को अच्छी तरह से अभिव्यंजित करता है। अतः भाषा, संस्कृति, विचार, मानवता, काव्यत्व काव्यरूपता, लौकिकता, पारलौकिकता आदि दृष्टियों से इसका अध्ययन आवश्यक है। इस प्रश्नपत्र में प्रथम सत्र में- कबीर, सूरदास और तुलसीदास तथा द्वितीय सत्र में- रहीम, बिहारी और मीरां पर विशेष परिचय प्राप्त करके मध्यकालीन कवियों की जानकारी प्राप्त करना हेतु है। इस प्रश्नपत्र के द्वारा विद्यार्थी भलीभाँति मध्यकालीन काव्य से, प्रवृत्त एवं भाषा, ग्रंथ आदि विविध दृष्टि से अवगत हो सकें।

इकाई -१ कबीर : जीवन परिचय – भक्त कवि रूप, भाव-पक्ष – शिल्प विधान – कबीर

संबंधी विविध टिप्पणियाँ – कबीर के संदर्भ में २५ साखियाँ ससंदर्भ व्याख्या।

इकाई -२ सूरदास : जीवन परिचय – भक्त कवि रूप- भावसौंदर्य – शिल्पविधान – सूर

संबंधी विविध टिप्पणियाँ – सूर के संदर्भ २५ पद – संसदर्भ व्याख्या।

इकाई -३ तुलसीदास : जीवन परिचय और कृतित्व – रामचरितमानस-५ पद, दोहावली 2 से १५ दोहा, कवितावली-२,८,१०, गीतावली-२ और विनयपत्रिका-५ और ८ पद।

समग्र रचनाओं की पद व्याख्या और सारांश। समग्र रचना का भाव और शिल्पपक्ष। तुलसी संबंधी विविध टिप्पणियाँ। पद और दोहा संबंधी ससंदर्भ व्याख्या।

इकाई -४ कबीर और सूरदास तथा तुलसी साहित्य की प्रासंगिक जानकारी।

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. पाठयपुस्तक – मध्यकालीन हिन्दी काव्य – संपादक – शिवकुमार मिश्र – पाश्वप्रकाशन- अहमदाबाद-1
2. कबीर- डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी- राजकमल प्रकाशन- नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली
3. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि- डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना- विनोद प्रकाशन- आगरा
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, नई दिल्ली, पटना
5. हिन्दी साहित्य का सुबोघ इतिहास – बाबू गुलाबराय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल- पुस्तक प्रकाशन – विक्रेता- आगरा
6. कबीर मीमांसा- डॉ. रामचन्द्र तिवारी- विश्व विद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी (उ.प्र)
7. सूरदास और उनका काव्य- डॉ. मैनेजर पांडे- वाणी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
8. हिन्दी आलोचना और डॉ. रामचन्द्र शुक्ल- डॉ. रामविलास शर्मा वाणी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9. गोस्वामी तुलसीदास- रामचन्द्र शुक्ल- नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
10. सूरदास- रामचन्द्र शुक्ल- नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
11. कबीर के आलोचक- डॉ. धर्मवीर- वाणी प्रकाशन- नई दिल्ली
12. कबीर के कुछ आलोचक- डॉ. धर्मवीर- वाणी प्रकाशन- नई दिल्ली
13. कबीर बाज भी, कपौत भी और पपीहा भी- डॉ. धर्मवीर- वाणी प्रकाशन- नई दिल्ली
14. कबीर- प्रकाशन- साहित्य अकादमी, रविन्द्र भवन, नई दिल्ली
15. सूरदास- प्रकाशन- साहित्य अकादमी, रविन्द्र भवन, नई दिल्ली
16. तुलसीदास- प्रकाशन- साहित्य अकादमी, रविन्द्र भवन, नई दिल्ली
17. मध्यकालीन हिन्दी काव्य- संपादक- डॉ. दिलीप मेहरा- ज्ञान विज्ञान प्रकाशन, कानपुर

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-2)

हिन्दी नाट्य साहित्य-I - MJR HIN - 201

साहित्य में जितना महत्त्व पद्य का है, उतना ही गद्य साहित्य का भी है। आधुनिक काल में जहाँ कविता के क्षेत्रमें कई मोड़ आए वहाँ गद्य के क्षेत्र में विभिन्न नई विधाओं का विकास हुआ। उसमें भी नाटक और कहानी के क्षेत्र में कविता की ही भांति कई मोड़ आए। नाटक दृश्य और श्रव्य दोनों का आस्वाद एक ही साथ कराता है, इसलिए 'काव्येषु नाटकम् रम्यम' कहा है। भारतेन्दु से प्रारंभ होकर नाट्य विधा नए आयामों को छूते हुए आज जिस मुकाम पर है उसका अध्ययन जीवन की अनुभूतियों, संवेदनाओं तथा विविध परिस्थितियों के साक्षात्कार हेतु सर्वथा अपेक्षित है।

इकाई -१ 1.1 हिन्दी का नाट्य साहित्य (सामान्य परिचय)

1.1 नाटक : अर्थ, स्वरूप एवं व्याख्या

1.2 नाटक के तत्व

1.3 नाटक और रंगमंच

1.2 नाटक का विकास :

1.2.1 भारतेन्दु काल

1.2.2 प्रसाद काल

1.2.3 प्रसादोत्तर काल

1.3 प्रसादोत्तर हिन्दी नाटकों की विशेषताएँ

इकाई -२ 2.1 उपेन्द्रनाथ अश्क और उनका अंजोदीदी

2.1.1 अंजोदीदी का कथ्य

2.1.2 पात्र

2.1.3 कथ्यगत विशेषताएँ

2.2 अंजोदीदी का शिल्प विधान

2.2.1 भाषा शैली

2.2.2 रंगमंचीयता

इकाई -३ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और बकरी नाटक

3.1 सक्सेना का परिचय

3.2 सक्सेना और उनके समकालीन नाटककार

इकाई -४ लोकनाट्य

4.1 अर्थ, स्वरूप एवं व्याख्या

4.2 लोकनाट्य परंपरा

4.3 लोकनाटक के तत्व

इकाई -५ 5.1 लोकनाट्य 'बकरी'

1.1 बकरी का कथ्य

1.2 पात्रालेखन

1.3 वस्तुगत विशेषताएँ

5.2 बकरी का शिल्प-विधान

2.1 भाषा

2.2 रंगमंचीयता

2.3 प्रतीकात्मकता

2.4 व्यंग्य

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. हिन्दी नाटक – डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
2. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाट्य- रामजन्म शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. समकालीन हिन्दी नाटककार- गिरीश रस्तोगी, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली।
4. हिन्दी नाटक और रंगमंच- पहचान और परख, इन्द्रनाथ मदान।
5. समसामयिक हिन्दी नाटकों में चरित्र सृष्टि, जयदेव तनेजा, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली।
6. नाट्यभाषा- गिरीश रस्तोगी
7. रंगदर्शन- नेमिचंद्र जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
8. हिन्दी एकांकी- सिद्धनाथकुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
9. एकांकी और एकांकीकार- रामचरण महेन्द्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-2)

हिन्दी कथासाहित्य-I - MJR HIN - 202

कथा साहित्य के बारे में छात्रों को विधिवत एवं व्यापक जानकारी प्राप्त हो, इस उद्देश्य से हिंदी उपन्यास एवं कहानी विधा को रखा गया है।

इकाई -१ हिन्दी का उपन्यास साहित्य

1.1 उपन्यास का अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा

1.2 उपन्यास के तत्व

1.3 उपन्यास का उदभव और विकास

1.4 प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास की विशेषताएँ

इकाई -२ राजेन्द्रयादव और सारा आकाश

2.1 राजेन्द्र यादव और समकालीन उपन्यासकार

2.2 सारा आकाश की कथावस्तु

2.3 पात्र परिचय एवं विशेषताएँ

2.4 संवादकला, देशकाल वातावरण

2.5 शिल्प, भाषा एवं शैली

2.6 उदेश्य-संवेदना

2.7 प्रमुख समस्याएँ

इकाई -३ हिन्दी कहानी साहित्य

3.1 कहानी- अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा

3.2 कहानी की तात्विक समीक्षा

3.3 हिन्दी कहानी की विकास यात्रा

3.4 हिन्दी कहानी के प्रमुख भेद

3.4.1 कथावस्तु के आधार पर

3.4.2 चरित्र के आधार पर

3.4.3 परिवेश के आधार पर

3.4.4 शैली के आधार पर

इकाई -४ पठित कहानी एवं कहानीकार

4.1 कहानियों का शीर्षक एवं कथ्य

4.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण

4.3 कहानी की कथ्यगत विशेषताएँ

4.4 राष्ट्रीयता, दलितचेतना, व्यंग्य, नारी भावना, आधुनिकता

4.5 समस्याएँ

इकाई -५ कहानियों का शिल्पविधान

5.1 कहानियों की भाषा

5.2 कहानियों की शैली

5.3 कहानियों की तात्विक समीक्षा

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. काव्य के रूप – बाबू गुलाबराय
2. मोहन राकेश – प्रतिनिधि कहानियाँ, सं. मोहन गुप्त
3. हिन्दी उपन्यास एक अनंतयात्रा, सं. अशोक वाजपेयी
4. आठवें दशक के हिन्दी उपन्यास, रजनीकान्त जैन
5. उपन्यास स्थिति और गति – डॉ. चंद्रकान्त बांदिवडेकर
6. हिन्दी उपन्यास और यर्थादवाद – डॉ. त्रिभुवन सिंह
7. मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिकता बोध – प्रा. उमाकेवलराम
8. साठोत्तर हिन्दी उपन्यास और नगरबोध- डॉ. प्रिया नायक
9. प्रेमचंद एवं समकालीन भारतीय उपन्यासकार – डॉ. श्रीमती कलावती
10. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन – विवेकीराय
11. आधुनिकता और हिन्दी साहित्य (कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास) – इन्द्रनाथ मदान
12. हिन्दी उपन्यास साहित्य में दाम्पत्य जीवन – डॉ. उर्मिला भटनागर
13. प्रेमचंद – सं. सत्येन्द्र
14. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों का शिल्प – डॉ. शोभा बेरेकर
15. हिन्दी उपन्यास के सौ वर्ष – सं. रामदरश मिश्र
16. नई कहानी – संदर्भ और प्रकृति – देवीशंकर अवस्थी
17. कुछ कहानियाँ – कुछ विचार – विश्वनाथ त्रिपाठी

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-3)

छायावादोत्तर काव्य-1 – MJR HIN - 301

आधुनिक हिन्दी कविता की लगभग डेढ़ सौ वर्ष की लंबी विकास यात्रा को किसी एक प्रश्नपत्र में समेट पाना व्यावहारिक दृष्टि से उचित नहीं है। अत: छायावाद तक के काव्य विकास को एक प्रश्नपत्र में बांटना अनिवार्य हो गया है। चूंकि छायावाद के बाद वैसे भी कविता क्षेत्र में कई आयाम जुडे प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता तक के प्रमुख कवि तथा उनकी कविताओं को छायावादोत्तर काव्य में शामिल किया जा रहा है। जिससे विद्यार्थी कविता के दौर में आए प्रत्येक मोड़ और तत्कालीन परिस्थितियों से अवगत हो सके।

इकाई -१ 1.1 आधुनिक हिन्दी कविता

1.1 आधुनिक हिन्दी कविता के विविध वाद

1.2 छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ

1.3 प्रमुख कवि

1.2 छायावादोत्तर काव्य

1.1.1 युगीन परिस्थितियाँ

1.1.2 प्रगतिवाद से अभिप्राय

1.1.3 प्रमुख प्रवृत्तियाँ और कवि

इकाई -२ नागार्जुन

2.1.1 कवि परिचय

2.1.2 कविताएँ

2.1.3 काव्यगत विशेषताएँ

इकाई -३ केदारनाथ अग्रवाल

3.1.1 कवि परिचय

3.1.2 कविताएँ

3.1.3 काव्यगत विशेषताएँ

इकाई -४ भवानीप्रसाद मिश्र

4.1.1 कवि परिचय

4.1.2 कविताएँ

4.1.3 काव्यगत विशेषताएँ

इकाई -५ शिवमंगलसिंह सुमन

5.1 कवि परिचय

5.2 कविताएँ

5.3 काव्यगत विशेषताएँ

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. हिन्दी कविता : तीन दशक- डॉ. रामदरश मिश्र
2. अज्ञेय : एक अध्ययन- डॉ. भोलाभाई पटेल
3. धूमिल और परवर्ती जनवादी कविता- डॉ. श्रीराम त्रिपाठी
4. नया काव्य : नये मूल्य- डॉ. ललित शुक्ल
5. समकालीन कविता- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
6. शब्द और मनुष्य- डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव
7. आधुनिक हिन्दी काव्य का स्वरूप और विकास- डॉ.आशा किशोर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8. नागार्जुन एक अध्ययन- डॉ. ललित अरोडा
9. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता- डॉ. अनंत मिश्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
10. नया हिन्दी काव्य- डॉ. शिवकुमार मिश्र

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-3)

हिन्दी साहित्य का इतिहास-I – MJR HIN - 302

(आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल)

हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, विभिन्न कालों, युगों, विचारधाराओं, वादों, शाखाओं आदि से छात्र सुपरिचित हो, इस उद्देश्य से हिंदी साहित्य के इतिहास का आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल पाठ्यक्रम में रखा गया है।

इकाई -१ हिन्दी भाषा उदभव और विकास

इकाई -२ हिन्दी साहित्य का आदिकाल

- 2.1 आदिकाल की विभिन्न परिस्थितियाँ
- 2.2 आदिकाल का नामकरण
- 2.3 आदिकाल के प्रमुख ग्रंथ एवं कवि
- 2.4 आदिकाल की सामान्य प्रवृत्तियाँ-विशेषताएँ
- 2.5 विशिष्ट रचनाकार-चंदबरदाई, अमीर खुसरो, विद्यापति
- 2.6 पृथ्वीराज रासो का संक्षिप्त परिचय

इकाई -३ हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल

- 3.1 भक्तिकाल का उदभव और विकास
- 3.2 भक्तिकाल की विभिन्न परिस्थितियाँ
- 3.3 भक्तिधारा की शाखाओँ का परिचय

इकाई -४ निर्गुण धारा

- 4.1 ज्ञानमार्गी के प्रमुख कवि
- 4.2 ज्ञानमार्गी शाखा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- 4.3 कबीर और उनका काव्य परिचय
- 4.4 प्रेममार्गी के प्रमुख कवि
- 4.5 प्रेममार्गी शाखा की विशेषताएँ-प्रवृत्तियाँ
- 4.6 जायसी और उनका पदमावत

इकाई -५ सगुण घारा

- 5.1 रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि
- 5.2 रामभक्ति शाखा की प्रवृत्तियाँ-विशेषताएँ
- 5.3 तुलसीदास और उनका रामचरितमानस-परिचय
- 5.4 कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवियों का परिचय
- 5.5 कृष्ण भक्ति शाखा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- 5.6 भक्तिकाल एक स्वर्णकाल के रूप में

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – बाबू गुलाबराय
3. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – गणपतिचंद्र गुप्त
4. बिहारी सार्धशती – ओमप्रकाश
5. हिन्दी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारी
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास – श्यामचंद्र कपूर
7. हिन्दी साहित्य का आदिकाल – हजारीप्रसाद द्विवेदी
8. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. रामकुमार वर्मा
9. हिन्दी साहित्य युग एवं प्रवृत्तियाँ – डॉ. विजयपाल सिंह
10. हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास – राजनाथ शर्मा

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-3)

प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य-2 - MJR HIN - 303

प्राचीन से तात्पर्य है आदिकाल और मध्यकाल सही अर्थ में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास आदिकाल से शुरु होता है। इसमें धार्मिक तथा ऐहिक दो प्रकार का साहित्य मिलता है, जो प्रबंध मुक्तक, रासो, फागु, चरित सुभाषित आदि विविध काव्यरूपों में अभिव्यंजित है। मध्यकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि के रूपमें इसे प्रतिस्थापित किया जाता है।

मध्यकालीन काव्य में भक्ति काव्य जहाँ लोकजागरण को स्वर देनेवाला है, वहीं रीतिकाल अपने लौकिक-शृंगारिक परिदृश्य में तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्थितियों को अच्छी तरह से अभिव्यंजित करता है। अतः भाषा, संस्कृति, विचार, मानवता, काव्यत्व काव्यरूपता, लौकिकता, पारलौकिकता आदि दृष्टियों से इसका अध्ययन आवश्यक है। इस प्रश्नपत्र में प्रथम सत्र में- कबीर, सूरदास और तुलसीदास तथा द्वितीय सत्र में- रहीम, बिहारी और मीरां पर विशेष परिचय प्राप्त करके मध्यकालीन कवियों की जानकारी प्राप्त करना हेतु है। इस प्रश्नपत्र के द्वारा विद्यार्थी भलीभाँति मध्यकालीन काव्य से, प्रवृत्त एवं भाषा, ग्रंथ आदि विविध दृष्टि से अवगत हो सकें।

इकाई -१ रहीम जीवन परिचय – कृतित्व परिचय- रहीम के दोहे- १ से ५, ११ से २५ तथा ३७,४४,४६,४९,५१,५४,५७,५८ और ६० कुल दोहे- २५, इन दोहे की व्याख्या और सारांश। दोहों से ससंदर्भ व्याख्या। दोहों से परिचयात्मक प्रश्न तथा टिप्पणियाँ।

इकाई -२ बिहारी

1.1 बिहारी जीवन परिचय- कृति परिचय
1.2 बिहारी काव्य का परिचय- भाव और शिल्प पक्ष
1.3 २५ दोहे के संदर्भ में परिचयात्मक प्रश्न
1.4 तत्संबंधी संदर्भ सहित व्याख्या
1.5 बिहारी के दोहे संबंधी टिप्पणियाँ

इकाई -३ मीरां

1.1 मीरां के जीवन- कृति परिचय
1.2 पदावली संबंधी समझ
1.3 पद संबंधी व्याख्या और सारांश
1.4 मीरां पदावली संबंधी परिचयात्मक प्रश्न
1.5 ससंदर्भ व्याख्या
1.6 टिप्पणियाँ

इकाई -४ तीनों कवियों की प्रासगिक जानकारी

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. रहीम के २५ दोहे- 'है मराल को मानसर, एकै ठोर रहीम'- पुस्तक में से- संपादक- प्राणनाथ पंकज- रूपा एण्ड कंपनी नई दिल्ली।
2. बिहारी एवं मीरां दोहे- मध्यकालीन हिन्दी काव्य- पुस्तक में से- शिवकुमार मिश्र- पाश्व प्रकाशन, अहमदाबाद।
3. ये रहीम दर-दर फिरही (रहीम दोहावली)- संपादक एवं व्याख्या- डॉ. श्रीकांत उपाध्याय- नेशनल पब्लिसिंग- नई दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास- बाबू गुलाबराय प्रकाशन- लक्ष्मी नारायण अग्रवाल- पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता- आगरा।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल- प्रकाशन- लोकभारती प्रकाशन- इलाहाबाद- पटना- नई दिल्ली।
6. मीरांबाई- संपादक- ललिता प्रसाद शुक्ल- हिन्दी साहित्य संमेलन प्रयाग
7. मीरां का काव्य- डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी- वाणी प्रकाशन- नई दिल्ली।
8. रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना- डॉ. बच्चनसिंह- विश्व विद्यालय प्रकाशन चौक- वाराणसी।
9. बिहारी वागविभूती- आचार्य विश्वप्रसाद मिश्र
10. हिन्दी साहित्य कोश- भाग-१,२- संपादक- डॉ. धीरेन्द्र वर्मा- प्रकाशन- ज्ञानमंडल लिमिटेड लंका- वाराणसी।
11. सन्त साहित्य कोश- संपादक- श्री रमेशचंद्र मिश्र
12. कबीर विशेषांक (पत्रिका-सापेक्ष)- संपादक- महावीर अग्रवाल
13. रहीम के दोहे- संपादक- आबिद रिजवी- मनोज पब्लिकेशन
14. रहीम- संपादक- प्रकाशन- साहित्य अकादमी- रविन्द्र भवन, नई दिल्ली।
15. बिहारी- संपादक- प्रकाशन- साहित्य अकादमी- रविन्द्र भवन, नई दिल्ली।
16. मीरां- संपादक- प्रकाशन- साहित्य अकादमी- रविन्द्र भवन, नई दिल्ली।

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-4)

छायावादोत्तर काव्य-2 – MJR HIN - 401

आधुनिक हिन्दी कविता की लगभग डेढ़ सौ वर्ष की लंबी विकास यात्रा को किसी एक प्रश्नपत्र में समेट पाना व्यावहारिक दृष्टि से उचित नहीं है। अत: छायावाद तक के काव्य विकास को एक प्रश्नपत्र में बांटना अनिवार्य हो गया है। चूंकि छायावाद के बाद वैसे भी कविता क्षेत्र में कई आयाम जुडे प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता तक के प्रमुख कवि तथा उनकी कविताओं को छायावादोत्तर काव्य में शामिल किया जा रहा है। जिससे विद्यार्थी कविता के दौर में आए प्रत्येक मोड़ और तत्कालीन परिस्थितियों से अवगत हो सके।

इकाई -१ प्रयोगवाद, नई कविता तथा समकालीन कविता से अभिप्राय

1.1 प्रयोगवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1.2 प्रयोगवाद की शिल्पगत विशेषताएँ

1.3 प्रयोगवाद और नई कविता

1.4 नई कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1.5 नई कविता की शिल्पगत विशेषताएँ

1.6 नई कविता और समकालीन कविता

1.7 समकालीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1.8 समकालीन कविता की शिल्पगत विशेषताएँ

इकाई -२ 2.1 अज्ञेय

2.1.1 कवि परिचय

2.1.2 कविताएँ

2.1.3 काव्यगत विशेषताएँ

इकाई -३ 3.1 नरेश मेहता

3.1.1 कवि परिचय

3.1.2 कविताएँ

3.1.3 काव्यगत विशेषताएँ

इकाई -४ 4.1 सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

4.1.1 कवि परिचय

4.1.2 कविताएँ

4.1.3 काव्यगत विशेषताएँ

इकाई -५ 5.1 धूमिल

5.1.1 कवि परिचय

5.1.2 कविताएँ

5.1.3 काव्यगत विशेषताएँ

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. हिन्दी कविता : तीन दशक- डॉ. रामदरश मिश्र
2. अज्ञेय : एक अध्ययन- डॉ. भोलाभाई पटेल
3. धूमिल और परवर्ती जनवादी कविता- डॉ. श्रीराम त्रिपाठी
4. नया काव्य : नये मूल्य- डॉ. ललित शुक्ल
5. समकालीन कविता- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
6. शब्द और मनुष्य- डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव
7. आधुनिक हिन्दी काव्य का स्वरूप और विकास- डॉ.आशा किशोर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8. नागार्जुन एक अध्ययन- डॉ. ललित अरोडा
9. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता- डॉ. अनंत मिश्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
10. नया हिन्दी काव्य- डॉ. शिवकुमार मिश्र

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-4)

हिन्दी कथासाहित्य-2 MJR HIN - 402

कथा साहित्य के बारे में छात्रों को विधिवत एवं व्यापक जानकारी प्राप्त हो, इस उद्देश्य से हिंदी उपन्यास एवं कहानी विधा को रखा गया है।

इकाई -१ कमलेश्वर और उनका उपन्यास समुद्र में खोया हुआ आदमी

1.1 कमलेश्वर का परिचय

1.2 व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.3 कमलेश्वर और उनके समकालीन उपन्यासकार

इकाई -२ सामाजिक व्यंग्य और समुद्र में खोया हुआ आदमी

2.1 व्यंग्य अर्थ, स्वरूप और व्याख्या

2.2 व्यंग्य का उदेश्य

2.3 समुद्र में खोया हुआ आदमी

2.4 उपन्यास में व्यंग्य

2.5 पठित उपन्यास की प्रासंगिकता

इकाई -३ समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास का तात्विक विश्लेषण

3.1 कथ्यगत विशेषताएँ

3.2 पात्रों की विशेषताएँ

3.3 संवाद-कथोपकथन

3.4 देशकाल-वातावरण (परिवेश)

3.5 भाषा शैली

3.6 उदेश्य

इकाई -४ आधुनिक हिन्दी कहानी एवं पठित कहानियाँ

4.1 कथ्यगत विशेषताएँ

4.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण

4.3 शिल्प विधान

4.4 भाषा-शैली

इकाई -५ पठित कहानियों की तात्विक समीक्षा

5.1 प्रमुख समस्याएँ

5.2 संवेदना, राष्ट्रप्रेम

5.3 ऐतिहासिकता

5.4 परिस्थिति

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. काव्य के रूप – बाबू गुलाबराय
2. मोहन राकेश – प्रतिनिधि कहानियाँ, सं. मोहन गुप्त
3. हिन्दी उपन्यास एक अनंतयात्रा, सं. अशोक वाजपेयी
4. आठवें दशक के हिन्दी उपन्यास, रजनीकान्त जैन
5. उपन्यास स्थिति और गति – डॉ. चंद्रकान्त बांदिवडेकर
6. हिन्दी उपन्यास और यर्थादवाद – डॉ. त्रिभुवन सिंह
7. मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिकता बोध – प्रा. उमाकेवलराम
8. साठोत्तर हिन्दी उपन्यास और नगरबोध- डॉ. प्रिया नायक
9. प्रेमचंद एवं समकालीन भारतीय उपन्यासकार – डॉ. श्रीमती कलावती
10. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन – विवेकीराय
11. आधुनिकता और हिन्दी साहित्य (कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास) – इन्द्रनाथ मदान
12. हिन्दी उपन्यास साहित्य में दाम्पत्य जीवन – डॉ. उर्मिला भटनागर
13. प्रेमचंद – सं. सत्येन्द्र
14. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों का शिल्प – डॉ. शोभा वबेरेकर
15. हिन्दी उपन्यास के सौ वर्ष – सं. रामदरश मिश्र
16. नई कहानी – संदर्भ और प्रकृति – देवीशंकर अवस्थी
17. कुछ कहानियाँ – कुछ विचार – विश्वनाथ त्रिपाठी

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-4)

हिन्दी साहित्य का इतिहास -2 MJR HIN - 403

(आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल)

हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, विभिन्न कालों, युगों, विचारधाराओं, वादों, शाखाओं आदि से छात्र सुपरिचित हो, इस उद्देश्य से हिंदी साहित्य के इतिहास का आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल पाठ्यक्रम में रखा गया है।

इकाई -१ रीतिकाल

- 1.1 नामकरण, समय निर्धारण
- 1.2 रीतिकाल की पृष्ठभूमि
  - 1.2.1. दरबारी
  - 1.2.2. ऐतिहासिक
  - 1.2.3. सामाजिक
  - 1.2.4. सांस्कृतिक
  - 1.2.5. धार्मिक
  - 1.2.6. साहित्यिक
- 1.3 रीतिकाल की विभिन्न परिस्थितियाँ
- 1.4 सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक

इकाई -२ रीतिकाल की धाराओं का परिचय

- 2.1 साहित्यिक प्रवृत्तियाँ-विशेषताएँ
- 2.2 रीतिकाल का अर्थ, स्वरूप
- 2.3 रीतिकालीन काव्य का स्वरूप

इकाई -३ रीतिबध्ध काव्यधारा

- 3.1 प्रमुख कवि
- 3.2 प्रमुख प्रवृत्तियाँ- विशेषताएँ

इकाई -४ रीतिमुक्त काव्यधारा

- 4.1 रीतिमुक्त विशिष्ट रचनाकार
- 4.2 रीतिमुक्त धारा की विशेषताएँ एवं प्रवृत्तियाँ

इकाई -५ रीतिकाल के प्रमुख रचनाकार और रचनाएँ

- 5.1 बिहारी, धनानंद, देव
- 5.2 दयाराम सतसई, प्रवीणसागर, रामचंद्रिका
- 5.3 रीतिकालीन कवियों का भाषा-शिल्प

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – बाबू गुलाबराय
3. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – गणपतिचंद्र गुप्त
4. बिहारी सार्धशती – ओमप्रकाश
5. हिन्दी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारी
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास – श्यामचंद्र कपूर
7. हिन्दी साहित्य का आदिकाल – हजारीप्रसाद द्विवेदी
8. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. रामकुमार वर्मा
9. हिन्दी साहित्य युग एवं प्रवृत्तियाँ – डॉ. विजयपाल सिंह
10. हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास – राजनाथ शर्मा

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-4)

हिन्दी नाट्य साहित्य-II – MJR HIN - 404

साहित्य में जितना महत्त्व पद्य का है, उतना ही गद्य साहित्य का भी है। आधुनिक काल में जहाँ कविता के क्षेत्रमें कई मोड़ आए वहाँ गद्य के क्षेत्र में विभिन्न नई विधाओं का विकास हुआ। उसमें भी नाटक और कहानी के क्षेत्र में कविता की ही भांति कई मोड़ आए। नाटक दृश्य और श्रव्य दोनों का आस्वाद एक ही साथ कराता है, इसलिए 'काव्येषु नाटकम् रम्यम' कहा है। भारतेन्दु से प्रारंभ होकर नाट्य विधा नए आयामों को छूते हुए आज जिस मुकाम पर है, उसका अध्ययन जीवन की अनुभूतियों, संवेदनाओं तथा विविध परिस्थितियों के साक्षात्कार हेतु सर्वथा अपेक्षित है।

इकाई -१ 1.1 हिन्दी एकांकी का साहित्य (सामान्य परिचय)

1.1 एकांकी : अर्थ, स्वरूप एवं व्याख्या

1.2 नाटक और एकांकी

1.3 एकांकी का तात्विक विश्लेषण

1.2 आधुनिक एकांकी का विकास

2.1 प्रमुख एकांकी तथा एकांकीकार

2.2 एकांकी के प्रमुख भेद

2.3 आधुनिक एकांकी की विशेषताएँ

1.3 आधुनिक एकांकी

3.1 एकांकी के प्रमुख भेद (शिल्पगत)

3.2 अभिनय तथा रंगमंचीयता

इकाई -२ 2.1 एकांकी : 1. रीढ की हड्डी- जगदीशचंद्र माथुर

2. चारूमित्रा- डॉ. रामकुमार वर्मा

2.1 एकांकियों का कथ्य

2.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण

2.3 एकांकियों की कथ्यगत विशेषताएँ

2.4 एकांकियों का शिल्प : भाषा शैली

2.5 एकांकियों का तात्विक विश्लेषण

इकाई -३ 3.1 एकांकी : 1. मम्मी ठकुराइन- लक्ष्मीनारायण लाल

2. तांबे के कीड़े- भुवनेश्वर

1.1 एकांकियों का कथ्य

1.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण

1.3 कथ्यगत विशेषताएँ

3.2 एकांकियों का शिल्प :

2.1 भाषा-शैली

2.2 एकांकियों का तात्विक विश्लेषण

इकाई -४ 4.1 एकांकी : 1. माँ- विष्णुप्रभाकर

2. वे नाक से बोलते हैं- सुरेन्द्र वर्मा

1.1 एकांकियों का कथ्य

1.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण

1.3 कथ्यगत विशेषताएँ

4.2 एकांकियों का शिल्प

2.1 भाषा शैली

2.2 एकांकियो का तात्विक विश्लेषण

इकाई -५ 5.1 एकांकी : 1. यह स्वतंत्रता का युग है- उदयशंकर भट्ट

2. पश्चाताप- हरिकृष्ण प्रेमी

1.1 एकांकियों का कथ्य

1.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण

1.3 कथ्यगत विशेषताएँ

5.2 एकांकियों का शिल्प

2.1 भाषा शैली

2.2 एकांकियों का तात्विक विश्लेषण

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. हिन्दी नाटक – डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
2. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाट्य- रामजन्म शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. समकालीन हिन्दी नाटककार- गिरीश रस्तोगी, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली।
4. हिन्दी नाटक और रंगमंच- पहचान और परख, इन्द्रनाथ मदान।
5. समसामयिक हिन्दी नाटकों में चरित्र सृष्टि, जयदेव तनेजा, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली।
6. नाट्यभाषा- गिरीश रस्तोगी
7. रंगदर्शन- नेमिचंद्र जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
8. हिन्दी एकांकी- सिद्धनाथकुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
9. एकांकी और एकांकीकार- रामचरण महेन्द्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-5)

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल-I MJR HIN - 501

विद्यार्थी हिंदी साहित्य से परिचित हों तथा हिंदी साहित्य की प्रगति एवं विकास से परिचित हों, इस उद्देश्य से हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के साहित्य का ज्ञान देना छात्रो को आवश्यक हो जाता है।

इकाई -१ आधुनिक काल : नामकरण एवं सीमा निर्धारण

1.1 पृष्ठभूमि
1.2 नामकरण
1.3 काल-सीमा-निर्धारण
1.4 उपविभाजन की समस्या
1.5 आधुनिक काल की परिस्थितियाँ
1.6 खड़ी बोली गद्य का प्रारंभिक स्वरूप

इकाई -२ भारतेन्दु युग की कविता एवं प्रमुख कवि (पुर्नजागरण काल)

2.1 परिचय
2.2 भारतेन्दु युग की काव्य-प्रवृत्तियाँ
2.3 भाषा और शिल्प
2.4 भारतेन्दु युग के प्रमुख कवि
2.5 भारतेन्दु कालीन नाटक
2.6 भारतेन्दु युगीन उपन्यास
2.7 भारतेन्दु युगीन कहानी
2.8 भारतेन्दु युगीन निबंध
2.9 भारतेन्दु युग की समीक्षा
2.10 भारतेन्दु युगीन जीवनी यात्रावृत
2.11 भारतेन्दु युगीन पत्र-पत्रिकाएँ

इकाई -३ द्विवेदी युग की कविता एवं प्रमुख कवि

3.1 पृष्ठभूमि
3.2 द्विवेदी युग की प्रमुख काव्य-प्रवृत्तियाँ
3.3 द्विवेदी युग के प्रमुख कवि
3.4 द्विवेदी युगीन नाट्य-विकास की रूपरेखा
3.5 द्विवेदी युग के उपन्यास
3.6 द्विवेदी युगीन कहानी
3.7 द्विवेदी युगीन निबंध
3.8 द्विवेदी युगीन समीक्षा-प्रवृत्ति
3.9 द्विवेदी युगीन जीवनी-यात्रावृत
3.10 द्विवेदी युगीन पत्र-पत्रिकाएँ
3.11 द्विवेदी युग की प्रमुख कृत्तियाँ

इकाई -४ छायावाद युग :

4.1 छायावाद

4.2 छायावाद का प्रवर्तक कौन ?

4.3 छायावाद की प्रमुख प्रवृतियाँ

4.4 छायावाद के प्रमुख कवि

4.5 रहस्यवाद की परिभाषा

4.6 रहस्यवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

4.7 छायावादोत्तर राष्ट्रीय कविताधारा

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता, डॉ. वीरेन्द्रनारायण सिंह –पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद, प्रथम संस्करण- जून-2004
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल – सृष्टि बुक डिस्ट्रिब्यूटर्स, संस्करण- 2002
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र
4. मध्यकालीन रासो साहित्य, भारती मधुकान्त वैद्य, के.के.वोरा, वोरा एण्ड कम्पनी- संस्करण-1933
5. हिन्दी साहित्य का उदभव और विकास, आचार्य प्रसाद द्विवेदी
6. आधुनिक हिन्दी साहित्य का आदिकाल- श्री नारायण चतुर्वेदी, प्रभात प्रकाशन, चावडी बाजार, दिल्ली
7. भारतीय इतिहास कोश, डॉ. एस.एल.नागोरी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, संस्करण-2003
8. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ. शिवकुमार शर्मा
9. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. हिन्दी साहित्य, धीरेन्द्र वर्मा, जगदीश गुप्त, संस्करण-2000
11. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. सुधीन्द्र कुमार, अनीता श्रीवास्तव, संस्करण-2006
12. इतिहास और आलोचना, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-1957
13. हिन्दी द्वितीय महासमरोत्तर साहित्य का इतिहास, डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-5)

साहित्य के सिद्धांत और हिन्दी आलोचना -1 MJR HIN - 502

हिन्दी साहित्य के विधिवत अध्ययन के लिए भारतीय तथा पाश्चात्य समीक्षा सिद्धांतों तथा हिन्दी आलोचना की विविध प्रणालियों का ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है विद्यार्थी में साहित्य के मर्म को ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना। इन समीक्षा सिद्धांतों के आलोक में उसके आलोचक व्यक्तित्व का निर्माण संभव होता है तथा साहित्यिक समझ का विकास होता है।

इकाई -१ 1. भारतीय काव्य शास्त्र

1.1 भारतीय काव्य शास्त्र के प्रमुख आचार्य

2. काव्य का स्वरूप

2.1 लक्षण तथा परिभाषा

2.2 काव्य के प्रयोजन

2.3 काव्य के हेतु

2.4 काव्य के प्रकार

2.5 काव्य के गुण

2.6 काव्य के दोष

इकाई -२ 1. शब्द शक्ति

1.1 अभिधा के भेदोपभेद

1.2 लक्षणा के भेदोपभेद

1.3 व्यंजना के भेदोपभेद

2. काव्य संप्रदाय

2.1 रस, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि तथा अलंकार का सामान्य परिचय

इकाई -३ 1. अलंकार

3.1.1 अलंकार का अर्थ, कार्य, प्रकार

3.1.2 शब्दालंकार का सामान्य परिचय-अनुप्रास, यमक, श्लेष, वीप्सा, वक्रोक्ति

2. अर्थालंकार का परिचय

उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक, अनन्वय

3. छंद

3.3.1 छंद की अवधारणा (गति, यति, मात्रा की गणना)

3.3.2 मात्रिक छंद का परिचय

दोहा, सोरठा, चौपाई, हरिगीतिका, रोला

4. वर्णिक छंद का सामान्य परिचय

वसन्ततिलका, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीड़ित, सवैया

इकाई -४ प्रमुख हिन्दी आलोचक

1. आ. रामचंद्र शुक्ल
2. आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. डॉ. नंददुलारे बाजपेयी
4. डॉ. रामविलास शर्मा

इकाई -५ 1.1 प्रमुख सिद्धांत और वाद

1.1 वैचारिक पृष्ठभूमि

1.2 मार्क्सवाद

2.1 मार्क्सवादी सिद्धांत

2.2 मार्क्सवादी समाजशास्त्र

2.3 प्रमुख विशेषताएँ

1.3 स्वच्छंदतावाद

3.1 अभिप्राय (अर्थ, स्वरूप और व्याख्या)

3.2 प्रमुख विशेषताएँ

1.4 मनोविश्लेषणवाद

4.1 फ्रायड का परिचय

4.2 मनोवैज्ञानिक पद्धति

4.3 मनोविश्लेषणवाद की शक्ति और सीमा

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धांत और वाद- डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. काव्यशास्त्र : डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3. काव्य के रूप : बाबू गुलाबराय, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।
4. सिद्धांत और अध्ययन : बाबू गुलाबराय, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।
5. साहित्यशास्त्र : डॉ, ओमप्रकाशगुप्त, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद।
6. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र : योगेन्द्र प्रतापसिंह, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. हिन्दी आलोचना : विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
8. हिन्दी आलोचना का विकास : नन्दकिशोर नवल।

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-5)

विशेष साहित्यकार का अध्ययन -1 MJR HIN - 503

धर्मवीरभारती

स्नातक कक्षा की उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थी के लिए यह आवश्यक है कि वह तीन वर्ष तक हिन्दी (मुख्य) विषय का अध्ययन करने के बाद किसी ऐसे विशिष्ट साहित्यकार के समग्र साहित्य की जानकारी प्राप्त करे, जिसका चिंतन और सर्जन के क्षेत्र में तो विशिष्ट योगदान रहा हो पर इसके साथ-साथ उसका लेखन वर्तमान में प्रासंगिक भी हो।

1. सूरज का सातवाँ घोड़ा (प्रयोगशील लघु उपन्यास)
2. अन्धायुग (नाटक)
3. बन्द गली का आखिरी मकान (कहानी-संग्रह)

इकाई -१ 1. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास (सामान्य परिचय)

1.1 मनोवैज्ञानिक उपन्यास

1.2 सामाजिक चेतना से अनुगणित उपन्यास

1.3 ऐतिहासिक उपन्यास

1.4 आँचलिक उपन्यास

1.5 आधुनिक बोध के उपन्यास

1.6 प्रयोगशील उपन्यास

2 धर्मवीर भारती : साहित्यिक परिचय

इकाई -२ उपन्यासकार भारती

1. सूरज का सातवाँ घोड़ा

1.1 प्रयोगशील लघु उपन्यास : अर्थ, स्वरूप एवं व्याख्या

1.2 सूरज का सातवाँ घोड़ा का कथ्य

इकाई -३ सूरज का सातवाँ घोड़ा का शिल्प विधान

1. भाषा
2. शैली
3. उपन्यास की विशेषताएँ

इकाई -४ प्रेमचन्दोत्तर कहानी (सामान्य परिचय)

1. समाजवादी या प्रगतिवादी कहानी
2. व्यक्तिवादी कहानी
3. नई कहानी
4. सचेतन कहानी

5. आँचलिक कहानी
6. आधुनिकता बोध से अनुप्राणित कहानी
7. स्वातंत्र्योत्तर महिला कहानी लेखन

इकाई -५ कहानीकार भारती

1. बन्द गली का आखिरी मकान
   1.1 नई कहानी की प्रमुख विशेषताएँ
   1.2 'गुल की बन्नो'कहानी का कथ्य और शिल्प
   1.3 'सावित्री नम्बर दो' कहानी का कथ्य और शिल्प
   1.4 कहानियों का तात्विक अध्ययन

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. धर्मवीर भारती : व्यक्ति और साहित्यकार, डॉ. पुष्पा वास्कर, अलका प्रकाशन, कानपुर
2. धर्मवीर भारती के साहित्य-सृजन के विविध रंग, डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
3. धर्मवीर भारती : चिंतन और अभिव्यक्ति, डॉ. हरिवंश पांडेय, अतुल प्रकाशन, कानपुर
4. साहित्य के नये धरातल, शंकाएँ और दिशाएँ, कुमार केसरी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. अन्धायुग निकष पर, कुमार संजीव, संजीव प्रकाशन, हरियाणा
6. धर्मवीर भारती व्यक्तित्व और कृतित्व, बान्दिवडेकर चन्द्रकांत, नागरी प्रिन्टर्स, दिल्ली
7. मानव मूल्य और साहित्य, धर्मवीर भारती, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी
8. धर्मवीर भारती साहित्य के विविध आयाम, राजपाल हुकुमचंद, वि.भू.प्रकाशन, साहिबाबाद

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-5)

प्रादेशिक भाषा साहित्य -1 MJR HIN - 504

भारत बहुभाषी देश है। संविधान की आठवीं सूचि में संप्रति १८ प्रादेशिक भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। ये सब हिन्दी की भगिनी भाषाए है। विषयवस्तु की दृष्टि से सभी भारतीय भाषाओं में अदभुत साम्य है। इन सबके सर्वांग परिचय द्वारा ही अखंड भारतीयता और एक समेक्ति भारतीय साहित्य की अवधारणा फलीभूत हो सकती है। अस्तु, हिन्दीतर राज्य के हिन्दी विद्यार्थी से अपेक्षित है कि, वह हिन्दी भाषा और साहित्य के साथ-साथ अपनी प्रादेशिक भाषा में रचित साहित्य का भी सामान्य परिचय अर्जित करे।

प्रादेशिक भाषाओं में जिनका साहित्य वस्तुतः बहुत समृध्ध है और हिन्दी भाषा साहित्य का पूरक है। हिन्दीतर राज्यों के विश्वविद्यालयों से अपेक्षित है कि, वे अपनी प्रादेशिक भाषा के वैशिष्ट्य, उसमें रचित साहित्य, प्रमुख रचनाकार तथा भाषा के विशिष्ट प्रदेय को दृष्टि में रखते हुए इस प्रश्नपत्र का गठन निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर करें-

(क) भाषा का इतिहास

(ख) साहित्य का इतिहास

(ग) रचनाकार और उनकी प्रतिनिधि रचनाए

व्याख्या एवं विवेचन के लिए ४ प्रतिनिधि रचनाकारों की रचनाएँ, कहानियाँ आदि चयन विश्वविद्यालय द्वारा किया जायगा। प्रथम सत्रमें- नरसिंह, उमाशंकर जोशी, रघुवीर चौधरी और रमेश पारेख तथा द्वितीय सत्र में- अखो, पन्नालाल पटेल, हिमांशी शेलत और जोसेफ मेकवान आदि का परिचय प्राप्त कर सकें। ताकि यहाँ का विद्यार्थी प्रादेशिक गुजराती साहित्य की विविध गतिविधियों से परिचित होकर लाभान्वित हो सकें।

इकाई -१ गुजराती साहित्य का इतिहास- परिचय एवं प्राचीन गुजराती साहित्य के प्रकारों
की चर्चा।

इकाई -२ 1. नरसिंह के पद- १५ पद
2. उमाशंकर जोशी की १० कविताएँ
3. रघुवीर चौधरी की- ५ कहानियाँ
4. रमेश पारेख की १० कविताएँ

इकाई -३ उपरोक्त चारों साहित्यकारों का परिचय

इकाई -४ उपरोक्त चारों साहित्यकारों के काव्य का सौंदर्य- कला- भावपक्ष

इकाई -५ उपरोक्त चारों साहित्यकारों की कविता / पद / कहानी की संदर्भ- सहित व्याख्या करना।

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. नरसिंह ना पद – जयंत कोठारी – गूर्जर प्रकाशन
2. उमाशंकर जोशीनी कविता –(चयन) संपादक- भोलाभाई पटेल-प्रकाशन- गुजरात साहित्य अकादमी
3. मध्यकालीन गुजराती साहित्य नो इतिहास- अनंतराय म. रावल- गूर्जर प्रकाशन
4. अर्वाचीन गुजराती साहित्य नी विकासरेखा- धीरूभाई ठाकर- गूर्जर प्रकाशन
5. रमेश पारेख की कविता- १० विविध चुनी हुई
6. अर्वाचीन गुजराती साहित्य नो इतिहास- डॉ. रमेश एम. त्रिवेदी, आदर्श प्रकाशन- पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता- गांधीमार्ग, बाला हनुमान के पास, अहमदाबाद-1
7. लेखः- नरसिंह नुं अनुभव दर्शन- आंतरजीवन अने बाह्य जगतमां नरसिंह मेहता विशे अंगत नोंध- स्वाधायायलोक ग्रंथ में से- निरंजन भगत- गूर्जर ग्रंथ रत्न, अहमदाबाद।
8. रघुवीर चौधरी नी टूंकी वार्ता- रघुवीर चौधरी- रंगद्वार प्रकाशन- अहमदाबाद
9. भारतीय साहित्य- भाग १ से ७ – साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
10. नरसिंह मेहता- प्रत्येक कवि पर- साहित्य अकादमी विशेष- नई दिल्ली।
11. उमाशंकर जोशी- साहित्य अकादमी विशेष- नई दिल्ली।
12. रमेश पारेख- साहित्य अकादमी विशेष- नई दिल्ली।
13. रघुवीर चौधरी- साहित्य अकादमी विशेष- नई दिल्ली।
14. अखो- साहित्य अकादमी विशेष- नई दिल्ली।
15. पन्नालाल पटेल- साहित्य अकादमी विशेष- नई दिल्ली।

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-5)

संचार माध्यम लेखन -1 MJR HIN - 505

संचार माध्यम लेखन की जानकारी छात्रों को होना इसलिए भी आवश्यक है, ताकि वे संचार माध्यम की भाषा के संबंधमें जान सकें तथा उसका प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें।

इकाई -१

1.1 टी.वी.नाटक की तकनीक, टेलीड्रामा, टेलिफिल्म, डॉक्यू ड्रामा, प्रायोगिकस्तर

1.2 टी.वी. धारावाहिक में साम्य-वैष्यम

1.3 संचार माध्यम के अन्य विविध रूप

इकाई -२

2.1 साहित्यिक विद्याओं की दृश्य-श्रव्य रूपान्तरण

2.2 इलेक्ट्रोनिक मीडिया द्वारा प्रसारित समाचारों के संकलन, संपादन और प्रस्तुतिकरण की प्रविधि

2.3 संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित विज्ञापनों की भाषा

इकाई -३

3.1 विज्ञापन फिल्मों की प्रविधि

3.2 संचार माध्यमों की भाषा

3.3 हिन्दी के समक्ष आधुनिक जनसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी की चुनौतियाँ

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य, डॉ. रामअवतार शर्मा, नमन प्रकाशन
2. टी.वी. रेडियो: समूह माध्यम, हसमुख बाराडी, नवभारत साहित्य मंदिर
3. समाचार लेखन, पी.के. आर्य, प्रकाशक, विद्या विहार
4. राजभाषा हिन्दी, डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. इलेक्ट्रोनिक मीडिया, डॉ. सुधीर सोनी, युनि.पब्लिकेशन, जयपुर
6. दूरदर्शन: हिन्दी के प्रयोजनमूलक विविध प्रयोग, कृष्णकुमार रत्तू, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली
7. जनसंचार माध्यम: चुनौतियाँ और दायित्व, सं. त्रिभुवनराय, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली
8. संचार क्रांति और हिन्दी पत्रकारिता, सं. अशोककुमार शर्मा, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली
9. जनसंचार: विविध आयाम, सं. बृजमोहन गुप्त, तक्षशिला, नई दिल्ली

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-6)

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल -2 MJR HIN - 601

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल की विद्यार्थियों को सही समझ देना अत्यंत आवश्यक है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आधुनिक काल के हिंदी साहित्य के इतिहास के विभिन्न वादों को रखा गया है।

इकाई -१ प्रगतिवाद

इकाई -२ प्रयोगवाद

इकाई -३ नई कविता : स्वरूप एवं संवेदना

इकाई -४ साठोत्तरी हिन्दी कविता

इकाई -५ हिन्दी गीति काव्य

संदर्भ ग्रंथ

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता, डॉ. वीरेन्द्रनारायण सिंह, प्राश्र्व प्रकाशन, अहमदाबाद, प्रथम संस्करण- जून-2004
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, सृष्टि बुक डिस्ट्रिब्यूटर्स, संस्करण- 2002
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र
4. मध्यकालीन रासो साहित्य, भारती मधुकान्त वैद्य, के.के.वोरा, वोरा एण्ड कम्पनी- संस्करण-1933
5. हिन्दी साहित्य का उदभव और विकास, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
6. आधुनिक हिन्दी साहित्य का आदिकाल, श्री नारायण चतुर्वेदी, प्रभात प्रकाशन, चावडी बाजार, दिल्ली
7. भारतीय इतिहास कोश, डॉ. एस.एल.नागोरी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, संस्करण-2003
8. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ. शिवकुमार शर्मा
9. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. हिन्दी साहित्य, धीरेन्द्र वर्मा, जगदीश गुप्त, संस्करण-2000
11. हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. सुधीन्द्र कुमार, अनीता श्रीवास्तव, संस्करण-2006
12. इतिहास और आलोचना, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, संस्करण-1957
13. हिन्दी द्वितीय महासमरोत्तर साहित्य का इतिहास, डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-6)

साहित्य के सिद्धांत और हिन्दी आलोचना-2 MJR HIN - 602

हिन्दी साहित्य के विधिवत अध्ययन के लिए भारतीय तथा पाश्चात्य समीक्षा सिद्धांतों तथा हिन्दी आलोचना की विविध प्रणालियों का ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है विद्यार्थी में साहित्य के मर्म को ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना। इन समीक्षा सिद्धांतों के आलोक में उसके आलोचक व्यक्तित्व का निर्माण संभव होता है तथा साहित्यिक समझ का विकास होता है।

इकाई -१ पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत

1. पाश्चात्य समीक्षा का उदभव और विकास
   - 1.1 यूनानी और लैटिन समीक्षा से पुनर्जागरण युग
   - 1.2 स्वच्छन्दतावादी समीक्षा
   - 1.3 बीसवीं शती की समीक्षा
2. पाश्चात्य समीक्षा के उपकरण
   - 1.2.1 वस्तुवादी : सामान्य परिचय
   - 1.2.2 कलावादी : सामान्य परिचय
     - 2.1 बिम्ब : अर्थ, बिम्ब का कार्य, बिंबो का वर्गीकरण, बिम्ब का महत्व
     - 2.2 प्रतीक : अर्थ, प्रतीक का वर्गीकरण, प्रतीक का महत्व
     - 2.3 मिथक : उदभव, अर्थ एवं व्याख्या, मिथकों की उपादेयत

इकाई -२ प्लेटो

1. प्रस्तावना : प्लेटो पूर्व युग की देन
2. प्रेरणा, अनुकरण तथा विरेचन सिद्धांत का पूर्व रूप
3. प्लेटो के काव्य विषयक सिद्धांत
   - 3.1 अनुकरण
   - 3.2 विरेचन
   - 3.3 काव्य सत्य

इकाई -३ वर्डसवर्थ

1. वर्डसवर्थ का युग और परिस्थितियाँ
2. वर्डसवर्थ के विचार (काव्य और भाषा संबंधी)
3. काव्य की परिभाषा (वर्डसवर्थ के अनुसार)
4. वर्डसवर्थ का प्रदान

इकाई -४ मैथ्यू आर्नल्ड

1. मैथ्यू आर्नल्ड का परिचय
2. काव्य विषयक सिद्धांत
3. काव्य के समीक्षा संबंधी विचार
4. साहित्य में समीक्षा का महत्व
5. मैथ्यू का प्रदान

इकाई -५ आई. ए. रिचर्डस

1. परिचय
2. काव्य और विज्ञान
3. काव्य विषयक सिद्धांत
4. संप्रेषण का सिद्धांत
5. रिचर्डस का योगदान

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धांत और वाद- डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. काव्यशास्त्र : डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3. काव्य के रूप : बाबू गुलाबराय, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।
4. सिद्धांत और अध्ययन : बाबू गुलाबराय, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।
5. साहित्यशास्त्र : डॉ, ओमप्रकाशगुप्त, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद।
6. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र : योगेन्द्र प्रतापसिंह, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. हिन्दी आलोचना : विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
8. हिन्दी आलोचना का विकास : नन्दकिशोर नवल।

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-6)

विशेष साहित्यकार का अध्ययन -2 MJR HIN - 603

धर्मवीरभारती

स्नातक कक्षा की उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थी के लिए यह आवश्यक है कि वह तीन वर्ष तक हिन्दी (मुख्य) विषय का अध्ययन करने के बाद किसी ऐसे विशिष्ट साहित्यकार के समग्र साहित्य की जानकारी प्राप्त करे, जिसका चिंतन और सर्जन के क्षेत्र में तो विशिष्ट योगदान रहा हो पर इसके साथ-साथ उसका लेखन वर्तमान में प्रासंगिक भी हो।

1. सूरज का सातवाँ घोड़ा (प्रयोगशील लघु उपन्यास)
2. अन्धायुग (नाटक)
3. बन्द गली का आखिरी मकान (कहानी-संग्रह)

इकाई -१ प्रसादोत्तर हिन्दी नाटक (सामान्य परिचय)

1. आधुनिक भावबोध से सम्पृक्त नाटक
2. रंगमंचीय नाटक
3. साठोत्तरी ऐतिहासिक और सामाजिक नाटक
4. प्रयोगधर्मी नाटक

इकाई -२ 1. गीतिनाट्य अंधायुग

1.गीतिनाट्य से अभिप्राय

2. अंधायुग वस्तु-विधान
   1. कथ्य
   2. पात्र एवं चरित्र चित्रण

इकाई -३ अंधायुग युगीन संदर्भ (कथ्यगत विशेषताएँ)

1. मूल्य टकराव
2. जीवन में मर्यादा एवं सत्य की महत्ता
3. अस्तित्व बोध एवं युग-बोध की व्यापकता
4. वैयक्तिक जीवनादर्श
5. राजनीतिक जीवनादर्श
6. नारी के प्रति रचनाकार का दृष्टिकोण

इकाई -४ अंधायुग शिल्प-विधान

1. गीत योजना
2. मिथकत्व
3. भाषाशैली
4. रंगमंचीयता
5. शिल्पगत विशेषताएँ

इकाई -५ बन्द गली का आखिरी मकान

1. 'यह मेरे लिए नहीं' कहानी का कथ्य एवं शिल्प
2. 'बन्द गली का आखिरी मकान' कहानी का कथ्य एवं शिल्प
3. कहानियों का तात्विक अध्ययन

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. धर्मवीर भारती : व्यक्ति और साहित्यकार, डॉ. पुष्पा वास्कर, अलका प्रकाशन, कानपुर
2. धर्मवीर भारती के साहित्य-सृजन के विविध रंग, डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
3. धर्मवीर भारती : चिंतन और अभिव्यक्ति, डॉ. हरिवंश पांडेय, अतुल प्रकाशन, कानपुर
4. साहित्य के नये धरातल, शंकाएँ और दिशाएँ, कुमार केसरी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. अन्धायुग निकष पर, कुमार संजीव, संजीव प्रकाशन, हरियाणा
6. धर्मवीर भारती व्यक्तित्व और कृतित्व, बान्दिवडेकर चन्द्रकांत, नागरी प्रिन्टर्स, दिल्ली
7. मानव मूल्य और साहित्य, धर्मवीर भारती, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी
8. धर्मवीर भारती साहित्य के विविध आयाम, राजपाल हुकुमचंद, वि.भू.प्रकाशन, साहिबाबाद

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-6)

प्रादेशिक भाषा साहित्य-2 MJR HIN. -- 604.

भारत बहुभाषी देश है। संविधान की आठवीं सूचि में संप्रति १८ प्रादेशिक भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। ये सब हिन्दी की भगिनी भाषाए है। विषयवस्तु की दृष्टि से सभी भारतीय भाषाओं में अदभुत साम्य है। इन सबके सर्वांग परिचय द्वारा ही अखंड भारतीयता और एक समेक्ति भारतीय साहित्य की अवधारणा फलीभूत हो सकती है। अस्तु, हिन्दीतर राज्य के हिन्दी विद्यार्थी से अपेक्षित है कि, वह हिन्दी भाषा और साहित्य के साथ-साथ अपनी प्रादेशिक भाषा में रचित साहित्य का भी सामान्य परिचय अर्जित करे।

प्रादेशिक भाषाओं में जिनका साहित्य वस्तुतः बहुत समृध्ध है और हिन्दी भाषा साहित्य का पूरक है। हिन्दीतर राज्यों के विश्वविद्यालयों से अपेक्षित है कि वे अपनी प्रादेशिक भाषा के वैशिष्ट्य, उसमें रचित साहित्य, प्रमुख रचनाकार तथा भाषा के विशिष्ट प्रदेय को दृष्टि में रखते हुए इस प्रश्नपत्र का गठन निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर करें-

(घ) भाषा का इतिहास

(ङ) साहित्य का इतिहास

(च) रचनाकार और उनकी प्रतिनिधि रचनाए

व्याख्या एवं विवेचन के लिए ४ प्रतिनिधि रचनाकारों की रचनाएँ, कहानियाँ आदि चयन विश्वविद्यालय द्वारा किया जायेगा। प्रथम सत्रमें- नरसिंह, उमाशंकर जोशी, रघुवीर चौधरी और रमेश पारेख तथा द्वितीय सत्र में- अखो, पन्नालाल पटेल, हिमांशी शेलत और जोसेफ मेकवान आदि का परिचय प्राप्त कर सकें। ताकि यहाँ का विद्यार्थी प्रादेशिक गुजराती साहित्य की विविध गतिविधियों से परिचित होकर लाभान्वित हो सकें।

इकाई -१ अर्वाचीन गुजराती साहित्य का परिचय, भूमिका स्पष्ट करना और रचनाकारका स्थान निश्चित करना।

इकाई -२ 1. अखा के छप्पा-1,2,5,11,16,19,28,29,31,30,33,36,34,32,26- परिचय।

2. पन्नालाल पटेल की नवलकथा-'मलेला जीव'- परिचय

3. हिमांशी शेलत की ५ कहानियाँ परिचय।

4. जोसेफ मेकवान- आंगलियात- परिचय।

इकाई -३ उपरोक्त चारों रचनाकारों के परिचय प्राप्त करना।

इकाई -४ 'मलेला जीव'- कथावस्तु- चरित्र चित्रण -५- कहानियों के कथावस्तु- चरित्र चित्रण

इकाई -५ 'अखा के छप्पा' में से संदर्भ सहित व्याख्या करना।
आंगलियात, मलेला जीव और हिमांशी शेलत की कहानियों में से पूछा जाय।

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. ज्ञानी भक्त कवि अखो- (अखा के 15 छप्पा) इसमें से उदधृत- डॉ. नाथालाल गोहिल- पाश्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद।
2. 'मलेला जीव'- (कथा-सार)- भारतना गौरवग्रंथ में से- संकलन- डॉ. चन्द्रकान्त मेहता- प्रकाशन विभाग माहिती एवं प्रसारण मंत्रालय- भारत सरकार
3. पन्नालाल पटेल- 'मलेला जीव'- (नवलकथा)
4. हिमांशी शेलत की ५ कहानियाँ
5. जोसेफ मेकवान-'आंगलियात'- (उपन्यास)

समाजविद्या विशारद (बी.ए.) (सत्र-6)

संचार माध्यम लेखन -2 MJR HIN - 605

संचार माध्यम लेखन की जानकारी छात्रों को होना इसलिए भी आवश्यक है ताकि वे संचार माध्यम की भाषा के संबंधमें जान सके तथा उसका प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें।

इकाई -१

1.1 जनसंचार- प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियाँ
1.2 विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप-मुद्रण,द्रश्य, दृश्यश्राव्य
1.3 माध्यमोपयोगी लेखन का स्वरूप और उसके प्रकार
1.4 हिन्दी माध्यम लेखन का संक्षिप्त इतिहास

इकाई -२

2.1 रेडियो नाटक
2.2 रेडियो नाटक की प्रविधि
2.3 रंग नाटक, पाठ्यनाटक और पाठ्य नाटक का अन्तर

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य, डॉ. रामअवतार शर्मा, नमन प्रकाशन
2. टी.वी. रेडियो: समूह माध्यम- हसमुख बाराडी, नवभारत साहित्य मंदिर
3. समाचार लेखन, पी.के. आर्य, प्रकाशक- विद्या विहार
4. राजभाषा हिन्दी, डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. इलेक्ट्रोनिक मीडिया: डॉ. सुधीर सोनी, युनि.पब्लिकेशन, जयपुर
6. दूरदर्शन: हिन्दी के प्रयोजनमूलक विविध प्रयोग, कृष्णकुमार रत्तू, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली
7. जनसंचार माध्यम: चुनौतियाँ और दायित्व, सं. त्रिभुवनराय, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली
8. संचार क्रांति और हिन्दी पत्रकारिता, सं. अशोककुमार शर्मा, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली
9. जनसंचार: विविध आयाम, सं. बृजमोहन गुप्त, तक्षशिला, नई दिल्ली